नारी और समाज

श्रीमती मार्ग्रेट कुजूर
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शास.महाविद्यालय धरमजयगढ़ जिला– रायगढ़ (छ.ग)

मनुस्मृति में कहा गया है कि

यत्र नार्यस्तु पूज्यतें रमन्ते तत्र देवताः।
यतैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

जहॉ स्त्री जाति का आदर व सम्मान होता है, वहॉ पर हर आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। उस स्थान, समाज तथा परिवार से देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहॉ ऐसा नही होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहॉ देवकृपा नहीं रहती है और वहॉ संपन्न किये गये कार्य सफल नहीं होते हैं। भारत में नारी को प्राचीन समय से लेकर अब तक माता व देवी के स्वरूप माना गया है। यहॉ तक की हमारी पवित्र भारत भूमि को भारत माता के नाम से संबोधित किया जाता है। लेकिन हमारा यह भारतीय समाज प्राचीन काल से ही पितृसतात्मक रहा है और यहॉ व्यवस्था, संस्कार एवं कर्तव्य के नाम पर उन्हे दबाया जाता रहा है , उसे अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हर युग की सामाजिक, राजनैतिक , आर्थिक ,धार्मिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था से संघर्ष करना पडा़ है और पड़ रहा है। अतः यहॉ पर हम उन कालों व स्थितियों पर पर चर्चा करेगें जो हमें स्त्रियों की दशाओं के संबंध में बतायेंगे।

वैदिक एवं उपनिषद काल में नारी– वैदिक काल में स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त थे उन्हे अस्त्र–शस्त्र धारण करने के साथ–साथ युद्व एवं शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त था। भारतीय समाज का एकमात्र यह काल हमें इतिहास से प्राप्त होते है जहॉ स्त्रियों को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। वैदिक काल में अपाला,घोषा, विश्वावरा, माण्डवी आदि चमकता हुआ नक्षत्र थी। उपनिषद काल में गार्गी, मैत्रेय आदि की प्रतिभा अविस्मरणीय है। रामायण व महाभारत काल में स्त्रियों की दशा में कुछ ह्रास हुआ किन्तु फिर भी सीता ,द्रौपति जैसी नारियों के कारण यह काल भी नारी गौरव से सुषोभित था।

सल्तनत काल एवं मुगलकाल काल– इस काल में हमें स्त्रियों की

स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, जौहर ,सती प्रथा, जैसे कुप्रथाओं में नारी को बॉध दिया गया था। नारी को या तो घर के चार दिवारी में बंद कर परिवार पोषण के लिए समझा गया और कहीं उसे वस्तु समझ कर खरीदा, बेचा व युद्व में जीता, हारा गया तब नारी का अस्तित्व एक वस्तु के समान रह गया था। महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध लग गया उन्हे पूर्णरूप से पुरूषो पर आश्रित बन दिया गया। विध वाओं को अनादर का सामना करना पड़ा।

आधुनिक काल–अंग्रेजों के आगमन के साथ भारतीय समाज ने पुनः करवट लेना प्रारंभ किया । पाष्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय समाज में पुनः जागरण की स्थितियॉ निर्मित हुई। अंग्रेजी शिक्षा ने जहॉ एक ओर गुलाम मानसिकता वाले लोगो को तैयार किया वही दूसरी ओर ऐसे लोग मैदान में आये जो अपने समाज की जड़ता को मिटा कर , उसमें फैली कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। फलस्वरूप भारत में समाज सुधार आन्दोलनों की लहर सी चल पड़ी। जिसका सूत्रपात राजाराममोहन राय ने – 19वी शताब्दी में किया । उन्होने सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध जैसी कुप्रथाओं के –विरूद्व एक सशक्त आन्दोलन चलाया। ईश्वरचंद विद्यसागर, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, केशवचंद्र सेन, सर सैयद अहमद खॉ, ज्योतिबा फूले एनी बेसेंट, मार्गरेट काउसिन्स, महात्मा गॉधी आदि के प्रयासों से समाज सुधार आन्दोलन तीव्र हुए तथा भारतीय समाज में पुनः परिवर्तन की लहर चल पड़ी। ब्रिटिश शासन काल में विभिन्न समाज सुधार आन्दोलनों एवं स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शो से स्त्रियों में सामाजिक चेतना उत्पन्न हुई अनेक सुधार आन्दोलनों के फलस्वरूप विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, बालविवाह प्रतिबंध अधिनियम ,संपत्ति अधिकार अधिनियम, पारित हुआ तथा स्त्रियों को –मताधिकार मिला।

भारत देश की नारियों ने हर क्षेत्र में अपनी योग्यता को सिद्व किया है व देश का नाम गौरन्वित किया है। श्रीमती इंदिरा गॉधी ने अपने दृढ़ –संकल्प के बल पर भारत व विश्व राजनीति को प्रभावित किया है। तथा प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया है। श्रीमती सुषमा स्वराज एक सशक्त विदेश मंत्री के रूप में अपनी पहचान बनाई है। अपने कर्तव्य निर्वहन में श्रेष्ठता के लिए विख्यात भारत की पहली महिला आई. पी. एस. किरण बेदी आज भी लाखों महिलाओं की प्रेरणास्रोत है। सौदर्य प्रतियोगिता के क्षेत्र में भारत सुंदरियों ने पूरे विश्व में साबित कर दिया है